## ✻ अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2010 पर विशेष संदेश ✻

**– आचार्य महाप्रज्ञ**

वर्तमान में महिला जगत विकास की दिशा में द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है । प्रतीत हो रहा है कि अतीत वर्तमान को गति दे रहा है । शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, राजनीति आदि अनेक क्षेत्रों में उसके चरण कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं ।

वही वर्तमान अधिक सफल होता है, जो अतीत की विशेषताओं की उपेक्षा नहीं करता । मातृत्व, करूणा, लज्जा, शालीनता, सहिष्णुता, चरित्रनिष्ठा, दायित्वबोध – ये महिलाओं की विशेषताएं रही हैं । इनकी विस्मृति विकास के एक पक्ष को अधूरा बना देती है । अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला जगत अपनी मौलिक विरासत के प्रति ध्यान दे तो समाज के लिए नया सूर्योदय होगा ।

**14 फरवरी 2010**
**श्री डूंगरगढ़**

## ✻ अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2010 पर विशेष संदेश ✻

**– युवाचार्य श्री महाश्रमण जी**

हमारी दुनिया में पुरुष और महिला इन दोनों का अपना – अपना मूल्य हैं । समाज का एक आधार पुरुष है तो दूसरा आधार महिला है । महिला अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहे और पुरुष अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहे । मेरा सोचना है सर्वत्र समानाधिकार भी नहीं होना चाहिए । अपना–अपना उचित अधिकार सबको मिलना चाहिए । जिस के लिए जो अधिकार उपयुक्त है वह अधिकार उसको प्राप्त होना चाहिए ऐसा उचित हो सकता है ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस यह प्रेरणा देने वाला है कि महिला भी कमजोर न रहे । वह भी सशक्त बने । वह तन – मन – वचन से हर दृष्टि से सशक्त होती है तो समाज की सशक्तता में बड़ा योगदान मिल सकता है और मेरा मानना है कि महिलाएं सुसंस्कारी है । महिलाएं सुविज्ञ है तो वे अपने परिवारों को भी अच्छा बना सकती है व अच्छा रख सकती है ।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर महिला को या महिला जाति को इस इस बात की प्रेरणा देता रहे कि महिला भी सब दृष्टियों से स्वस्थ और सशक्त बनी रहे तथा वह भी समाज के उत्थान में अपना उचित योगदान देती रहें।

**शुभाशंशा**
**युवाचार्य महाश्रमण**

## ✻ अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2010 पर विशेष संदेश ✻

### मन के अंधेरे मिटे और सोच के अंधेरे छंटे – इस मिशन को एक –एक महिला के जेहन में उतारना है

**– साध्वी प्रमुखा महाश्रमणी**

एक विचारक का मन्तव्य है कि यदि हमारे अस्तित्व का नियम अहिंसा है तो भविष्य स्त्री के हाथों में है । इस मन्तव्य के साथ सबकी सहमति हो, यह जरूरी नहीं है । फिर भी यह तो स्वीकार करना ही होगा कि अहिंसा के धरातल पर फलित होने वाली मैत्री, करूणा, सेवा एवं संवेदनशीलता की सम्पदा स्त्री के जीवन को संवारती है । इसी सम्पदा के आधार पर महिला सशक्तिकरण की योजना क्रियान्वित हो सकती है ।

हिंसा एक निषेधात्मक भाव है । यह विध्वंस का प्रतीक है । हिंसा के परिणाम मानव जाति के भविष्य को धूमिल बना रहे है । स्त्री को सृजन का पर्याय माना जाता है । उसके जीवन से अहिंसा की धाराएं प्रवाहित होती रहती हैं । इन धाराओं से अभिषिक्त मानव ही सुखमय एवं शान्तिमय भविष्य की कल्पना कर सकता है ।

एक समय था, जब स्त्री के सामने अस्तित्व का संकट था । वह संकट पूर्णतः टल गया है, ऐसा तो नहीं लंगता पर पिछले कुछ दशकों में स्त्री ने अपनी अस्मिता स्थापित की है, अलग पहचान बनाई है और अपने कर्तृत्व को निखारा है । जिन क्षेत्रों में स्त्री के प्रवेश की कल्पना ही नहीं थी, उन क्षेत्रों में शिखर पर आरोहण करने की स्थिति बन चुकी है । पुरुष वर्ग के एकाधिकार वाले क्षेत्रों में भी महिलाशक्ति का प्रवेश हो गया है । यह शुभ भविष्य की सूचना है ।


Continued

सुकरात ने लिखा है – हमारा ध्येय या लक्ष्य ससता सुख नहीं । हमारा लक्ष्य ऐसा हो, जिसे पाने से ख्याति में चार चांद लग जाए । यह चिन्तन विकास की दिशाओं के निर्धारण में बहुत उपयोगी हो सकता है । महिलाएं किसी भी दिशा में छलांग भरें, पर उनके पैर यथार्थ की जमीन पर टिके रहें । अनुस्त्रोत में चलना सुविधाजनक हो सकता है, किन्तु प्रतिस्त्रोत में आगे बढ़े बिना मंजिल की दूरी कम नहीं होगी । इस दृष्टि से आवश्यक है कि महिलाओं की शक्ति एवं समय का उपयोग परिवार एवं समाज परिवार की सुन्दर संरचना में होता रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम हो या महिला सशक्तिकरण का प्रसंग हो, महिलाओं की सोच बड़ी होनी चाहिए । केवल अपनी अस्मिता को बचाकर कोई भी महिला अपनी भावी पीढ़ी को निश्चिन्त नहीं बना सकती । महिला संगठनों के कार्यक्रमों की बुनियाद सम्पूर्ण महिलाजाति की अस्मिता की सुरक्षा होनी चाहिए ।

उजाला और अंधेरा जीवन के दो पहलू हैं । महिलाएं भी इन दोनों पहलुओं से रूबरू हो चुकी है । अशिक्षा और संस्कारहीनता के अंधेरे इतने सघन थे कि उन्होंने महिलाओं की अस्मिता को लील लिया । इसका बड़ा कारण यह था कि अधिसंख्य महिलाओं को अपनी अस्मिता का बोध ही नहीं था । आचार्य तुलसी जैसे महापुरुषों ने रोशनी की मशाल उनके हाथों में थमाई और कहा – इसको बुझने मत देना । बस यही अभिप्रेरणा उन्हें अंधेरे से बाहर निकालने में कामयाब हुई है ।

महिलाओं को जो रोशनी मिली है, उसे घर – घर पहुंचाना है और हर महिला के जीवन को उजालों से भरना है । मन के अंधेरे मिटे और सोच के अंधेरे छंटे – इस मिशन को एक –एक महिला के जेहन में उतारना है ।

आज महिला समाज साक्षरता की दर में काफी इजाफा कर चुका है । उच्च शिक्षा के दरवाजों पर भी वह दस्तक दे रहा है । अब उम्मीद की जा रही है कि कॉर्पोरेट एवं मेनेजमेंट के क्षेत्र में भी वह नए रिकॉर्ड स्थापित करेगा । ऐसी सूचनाऐं उत्साहवर्धक हैं । पर पहली बात तो यह है कि विकास एक पक्षीय है । भावात्मक दृष्टि से वह और अधिक अंधेरो से घिरता जा रहा है । दूसरी बात, कुछ गिनी–चुनी महिलाओं के आगे बढ़ने मात्र से महिला समाज की अस्मिता उजागर नहीं हो पाएगी ।

महिला समाज की अस्मिता को आच्छादित करनेवाला अंधेरा नए – नए मुखौटे पहनकर खड़ा है । उसके कुछ मुखोंटों का स्वरूप इस प्रकार है :–

1. हीन भावना – अपने आपको परुष की तुलना में कमतर मानना ।
2. अहिंसा की अस्वीकृति – अपनी योग्यता को अस्वीकार करना ।
3. समाज में दोयमदर्जा – प्रतिस्पर्धा में स्त्री को हासिये में रखना ।
4. सोच की संकीर्णता – महिला जाति के व्यापक हितों को अनदेखा करना ।
5. सहारे ताकना – आत्मनिर्भरता की मनोवृति का अभाव ।
6. आत्माविस्मृति – थोड़े से प्रलोभन पर प्रवाह में बहना ।
7. काम का भार – घर एवं ऑफिस दोनों का दायित्व ओढना ।
8. निराशा की भावना – उचित मूल्यांकन के अभाव में निराश होना ।
9. जुझारुपन का अभाव – चुनौतियाँ झेलने की मानसिकता का अभाव ।
10. उदारता की कमी – महिलाओं द्वारा महिलाओं की कटु आलोचना ।
11. अधुनिकता का नशा – सांस्कृतिक मूल्यों की अवहेलना ।

दुनिया में अंधेरे की सत्ता है तो उजाले की भी सत्ता है । उजाले का होना ही पर्याप्त नहीं है। हर महिला तक उजाला पहुंचाने का संकल्प तथा इस संकल्प को फलवान बनानेवाला पुरुषार्थ महिला – सशक्तिकरण के स्वपन को साकार कर सकता है अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल अपने 380 शाखा मंडलों के सहयोग से महिला समाज द्वारा अपनी अस्मिता को पहचानने तथा शक्ति का समुचित उपयोग करने का अभियान चलाए, वह अपेक्षा है । क्योंकि –

**सूरज के रथ पर बैठे है तनकर आज अंधेरे ।**
**रच दो इन्हीं अंधेरो की छाती पर नये सवेरे ।।**

**नोटः–** उपरोक्त सभी संदेशों को शाखा मंडल अपने क्षेत्र में विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने का सलक्ष्य प्रयास करें शाखा मंडल अपनी क्षेत्रीय आवश्यकता अनुसार इसे विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करवाकर स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करवायें।